- विषय: आर्थिक विकास
- पेपर: जीएस-III

उतराखंड में सिल्कयारा बेंद बारकोट टनल को मत्रिमंडल की मंजूरी

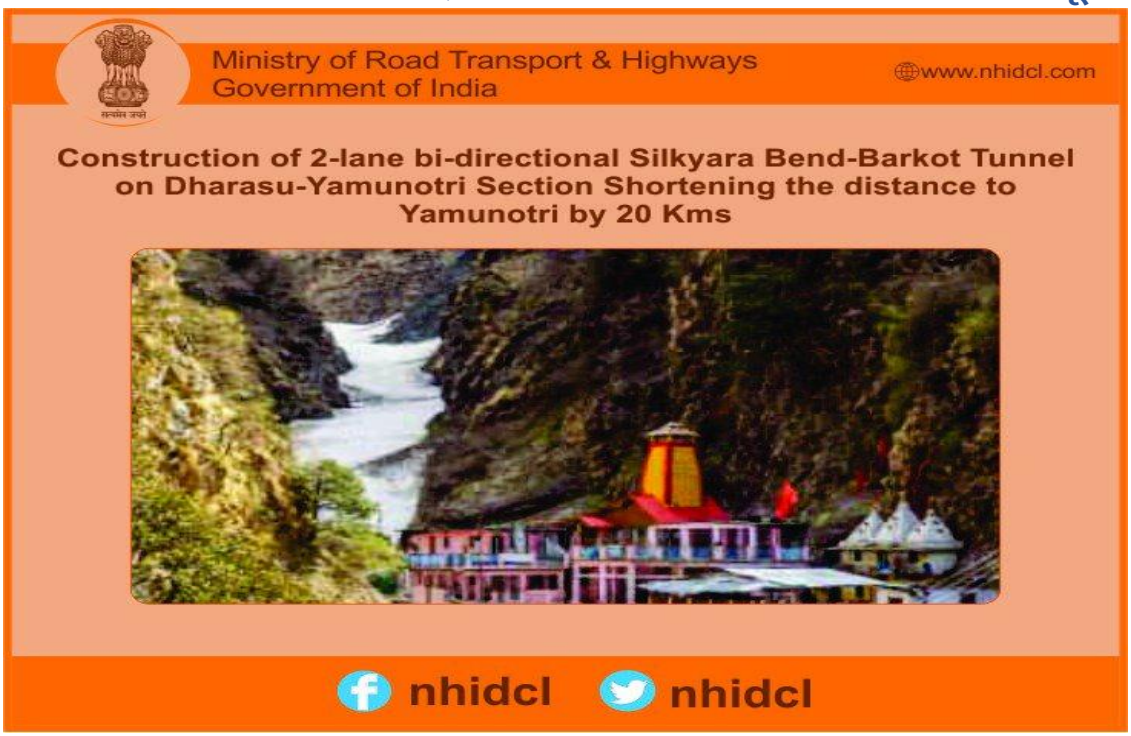

समाचार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने उत्तराखंड में 4.531 किलोमीटर लंबी दो लेन वाली दो तरफा सिल्कयारा बेंद बारकोट टनल के निर्माण को मंजूरी दे दी है।

➢ परियोजना के मुख्य विवरण:

- ये परियोजना उत्तराखंड राज्य में राजमार्ग संख्या 134 (पुराने राजमार्ग संख्या 94) के बीच में पड़ेगी। इसका काम इंजीनियरिंग, अधिप्राप्ति और निर्माण मोड के तहत किया जाएगा।
- इसका वित्त पोषण सड़क परिवहन और राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय द्वारा एनएच(ओ) स्कीम के तहत किया गया है। यह महत्वाकांक्षी चार धाम परियोजना का हिस्सा है।
- टनल के निर्माण से चारधाम यात्रा के एक धाम यमुनोत्री तक जाने के लिए हर तरह के मौसम में संपर्क मार्ग उपलब्ध होगा। इससे क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ ही व्यापार और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।
- परियोजना का उद्देश्य उत्तराखंड में 4.531 किलोमीटर लंबी दो लेन वाली दो तरफा टनल का निर्माण करना है, इसके साथ ही इसमें 328 मीटर लंबे संपर्क सड़क तथा धारसू-यमनोत्री के बीच निकलने केसुरक्षित मार्ग का निर्माण भी शामिल है।

परियोजना निर्माण की अवधि	4 साल
आंकलित लागत	. 1119.69 करोड़ रू
इसके तहत वित्त पोषित	राष्ट्रीय राजमार्ग (मूल) योजना
द्वारा लागू	सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच)

➢ यमुनोत्री के बारे में:

- यमुनोत्री का पवित्र स्थान उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में, गढ़वाल हिमालय के पश्चिमी भाग पर स्थित है।
- यमुनोत्री (उत्तरकाशी), जहां से यमुना का उद्भव है, समुद्री स्तर से लगभग 3,293 मीटर ऊंचा है।

परियोजना का लाभ:

- दूरी कम करेगा: इस सुरंग ने धरसू से यमुनोत्री तक की यात्रा दूरी लगभग 20 किलोमीटर तक कम कर दी है और यह लगभग एक घंटे तक कम कर देगा। धरसू और यमुनोत्री मंदिर के बीच कुल दूरी 76 किलोमीटर या 47.2 मील या 41 समुद्री मील है।
- सभी मौसमों में कनेक्टिविटी: यह यमुनोत्री (चारधाम यात्रा में से एक धाम) के लिए सभी मौसम में संपर्क प्रदान करेगा और देश के भीतर क्षेत्रीय सामाजिक-आर्थिक विकास, व्यापार और पर्यटन को प्रोत्साहित करेगा।
- ट्रैफिक रुकावट को ख़त्म करेगा:इस परियोजना में बाईपास, पुल, सबवे का निर्माण होगा जो ट्रैफिक बाधाओं को रोकने में मदद करेंगे।

➢ निष्कर्ष:

एक बार सुरंग पूरा करने से क्षेत्र में सभी मौसम सम्बंधी संपर्क उपलब्ध हो जायेंगे और क्षेत्रीय सामाजिक-आर्थिक विकास, व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा चूँकि इस परियोजना को पेड़ों को बचाने के लिए निर्धारित किया गया है, पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए यह अन्य परियोजनाओं के लिए भी अच्छा उदाहरण स्थापित करेगा।